E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(1): 21-25
Received: 13-11-2022
Accepted: 18-12-2022

डॉ. संध्या गौतम
एसो॰ प्रोफेसर, अध्यक्ष हिंदी विभाग, आर्य गर्ल्ज़ कालेज, अम्बाला छावनी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. संध्या गौतम
एसो॰ प्रोफेसर, अध्यक्ष हिंदी विभाग, आर्य गर्ल्ज़ कालेज, अम्बाला छावनी, हरियाणा, भारत

हरियाणवी लोकगीतों की मनोवैज्ञानिकता

डॉ. संध्या गौतम

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i1a.906

प्रस्तावना

किसी देश की संस्कृति का परिचय उस देश के लोक साहित्य से पर्याप्त मात्रा में मिल जाता है। लोक साहित्य समाज की आत्मा का उज्ज्वल प्रतिबिम्ब है। किसी देश की जातीय, राष्ट्रीय, साहित्यिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक एवं आर्थिक माप के लिए यदि कोई पैमाना हमारे पास है तो वह उस देश का लोक साहित्य हैं।''[1] लोक साहित्य की अनेक विधाएँ है – लोकगीत, लोककथाएँ, लोक नाट्य, लोक सुभाषित आदि। लोक साहित्य की इन विधाओं में सर्वाधिक सशक्त एवं प्रभावशाली विधा है 'लोकगीत'। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने भी लोक शब्द को परिभाषित करते हुए लिखा है कि – लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है, जो अभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पाण्डित्य की चेतना और पाण्डित्य के अहंकार से शून्य है और एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है, ऐसे लोक की अभिव्यक्ति जो तत्त्व मिलते है वे लोकतत्त्व कहलाते हैं।[2]

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार 'लोक' शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम नही है, बल्कि नगर व ग्रामों में फैली हुई समूची जनता है, जिसके व्यवहारिक ज्ञान का अर्थ साधारण पौथियां नही है। ये लोग नगर में परिष्कृत रूचि सम्पन्न तथा संस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं।[3]

अतः किसी भी देश की संस्कृति को व्यक्त करने वाले होते हैं – लोकगीत, लोकगीतों के विषय में महात्मा गाँधी ने कहा है कि –

लोकगीतों में धरती गाती है, पहाड़ गाते हैं
नदियाँ गाती है, उत्सव और मेलें
ऋतुओं और परम्पराएँ गाती है।[4]

हरियाणा के लोककाव्य के विषय में कहना होगा कि औद्योगिक तथा मशीनी युग की सभ्यता के आलोक में प्रगति के डग भरते इस प्रदेश की संस्कृति की पहचान इसके लोकगीतों के माध्यम से ही की जा सकी है। हरियाणा ही क्या संसार के सभी क्षेत्रों के लोक जीवन की सही पहचान का माध्यम उस क्षेत्र की लोक कलाएँ हो सकती हैं, जिसमें उसकी आशाएं–आकांक्षाएं, स्वप्न, कल्पनाएं और नैतिक आदर्श अभिव्यक्त होते हैं। हरियाणा के लोक गीत इसके लोक जीवन की सहजानुभूतियों का मर्मस्पर्शी काव्य है।

हरियाणा के समग्र लोक काव्य को मोटे तौर पर दो भागों में बांटा जा सकता है – लोकगीत और नाट्यलोक गीत नाट्य का जाना माना रूप इस प्रदेश में सांग के नाम से प्रसिद्ध है। लोकगीतों का वर्गीकरण करना चाहें तो उन्हें छः वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

1. ऋतुओं के गीत– इसमें इस प्रदेश की प्रसिद्ध ऋतुओं – वर्षा और बसन्त, सावन और फाल्गुन के गीत सम्मिलित किए जा सकते हैं।
2. दिनचर्या के गीत – इसमें खेत, खलिहानों, पनघट, चक्की पीसने, चरखा चलाने के गीतों को शामिल किया जा सकता है।
3. सांस्कृतिक गीत – इसमें सामाजिक, धार्मिक, त्याहारों, पर्वो, धार्मिक अनुष्ठानों से सम्बन्धित गीतों को लिया जा सकता है।
4. पारिवारिक गीत – इसके अंतर्गत पुत्र–पुत्री का जन्म, दहेज, विवाह आदि से सम्बद्ध अवसरों के गीत आते हैं।
5. देश–प्रेम सम्बन्धी गीत – इसमें सैनिक जीवन, वीरता तथा अन्य राष्ट्रीय भावों के गीत शामिल किए जा सकते हैं।[5]

इन लोकगीतों में हरियाणा का सरस जीवन प्रतिबिम्बित होता है। मनोवैज्ञानिक स्तर पर इनमें मानव मन की विभिन्न परतें खोलकर रख दी गई हैं। सामाजिक दृष्टि से इन लोकगीतों में रीति–रिवाजों का उल्लेख तथा आर्थिक स्थिति का चित्रण होता है। किन्तु इन सब की अपेक्षा लोकगीतों का साहित्यिक महत्व सर्वाधिक है। इन गीतों में दर्शन के साथ ही जीवन की थरथराहट है। संवेदनशीलता के साथ ही खरापन है। किसी भी शिष्ट साहित्य से वह हीन नही है। भाषा, छंद, अलंकार और रस इन अनगढ़ गीतों में भी है। भावपक्ष की प्रतिष्ठा हरियाणवी लोकगीतों में खूब मिलती है, जिसका उदाहरण वात्सल्य रस से परिपूर्ण निम्नलिखित गीत से दिया जा सकता हैः

''आ जा री निंदिया, निद्रा बन से,
मेरा मुन्ना सौवे, छनिक भर में।
तोसक तनिक परने से
आ जा री निंदिया, निंद्रा बन से।
मुन्ना आव न नियउरे से
दादी खेलावे उजियउरे से
आजा री निंदिया निद्रा बन से,
मेरा मुन्ना सौवे छनिक भर में।''

हरियाणा के लोकगीतों में प्रायः कोमल, मधुर रस ही संचरित हुए हैं। रौद्र, भयानक, जुगुप्सा का उनमें प्रायः अभाव है। इस का कारण यही है कि हरियाणा निवासियों का जीवन भी अपेक्षाकृत शांति में ही व्यतीत होता है। मानव की दुर्दान्त पिपासा–लालसा, आसुरी तृप्ति, उसकी क्रूरता और भीषण स्वार्थपरता के नमूने यहां अपेक्षाकृत बहुत कम मिलेंगे। शहरी सभ्यता के जहरीले दंश से भी वे बचे हैं। इसलिए उनके जीवन में सरलता और सच्चाई है।
हरियाणा के लोकगीतों में किसी भी रस का स्वतंत्र विकास नहीं हुआ है। किसी भी गीत के विषय में यह नहीं कहा जा सकता कि अमुक गीत के साथ–साथ शृंगार रस का बहुत व्यापक प्रसार मिलता है तथा इसी की प्रधानता है। इसमें शृंगार का रूप नितान्त संयत, शुद्ध, दिव्य और पवित्र है।
मानव जन्म के पहले चरण में पुत्र जन्म का सम्बंध भी शृंगार तथा वात्सल्य रस है। पुत्र जन्म के अवसर पर हरियाणा में कांसी की थाली बजाई जाती है। आवाज सुनकर आस–पास की महिलाएं एकत्र हो जाती हैं। इस अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में पुत्र जन्म की कामना, परिवार की प्रसन्नता तथा जच्चा का वर्णन होता है, जो इन दोनों के अन्तर्गत ही आता है। क्योंकि पुत्र जन्म भी प्रस्तुत पति–पत्नी के प्रेम का ही सुन्दर परिणाम है। पुत्र जन्म के बाद मुंडन, जनेउ तथा विवाह के उत्सव तथा प्रसन्नता के ही अवसर आते हैं। जिनको लोक ह्रदय लोकगीतों के रूप में व्यक्त करता है। पुत्र जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले हरियाणवी लोकगीतों में शृगार तथा वात्सल्य रस का वर्णन स्थान–स्थान पर मिलता है। उदाहरण के लिए यहां पर निम्नलिखित पुत्र जन्म पर गाए जाने वाले गीतों से शृंगार रस का उदाहरण दिया जा सकता है–

जच्चा – मैं तो रूस रहूंगी बालम हरगिज बोल्यूं ना,
मेरी सास बुलाई ना मेरो नार छुआयो ना,
मैं तो रूस रहूंगी बालम।................. ।
पति – तेरी दाई बला दयुंगा तेरो नार छुआ दयुंगा।
मैं तो हरदम ताबेदार गोरी तरे पायें तो पड़ रहूंगा।

इसी प्रकार से एक गीत की कुछ पंक्तियां और देखिए जिस में वात्सल्य रस का अति सुन्दर उदाहरण देखने को मिलता है।
पाया में पेंजणियां लाल्ला, छुनक छुनक डोल्लेगा।
हरी जरी की टोपलि, बजार सुई डोल्लेगा।
दादा कह के बोलेगा, दादी की गोदी खेल्लेगा।
पाया में पेंजणियां लाल्ला, छुनक छुनक खेल्लेगा।
इसी तरह से दूसरे बहुत से गीत गर्भवती की मनोदशा, उसकी शारीरिक चेष्टाओं तथा परिवर्तनों को स्पष्ट करते हैं:
मेरा पहला महीना लाग्या है सासु ने बेरया लाग्या है,
वा दूध और दलिया लाई है मेरा देख जी घबराया है।
मुझे दूज्या महीना लागया है नन्दी ने बेरया लाग्या है
वा दाल चरचरी लाई है मैंने झट से जेब भराई है।''''''
मुझे चौथा महीना लाग्या है सैयां ने बेरया लाग्या है,
वो बेर झाड़िया के लाया है, मैंने झट से जेब भराई है।

इसी प्रकार अन्य महीनों का वर्णन किया जाता है। जन्म संस्कार की अपेक्षा हरियाणा के विवाह गीतों में शृंगार रस का आनन्द अधिक मात्रा में मिलता है। विवाह के प्रत्यक अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में शृंगारी भावनाओं की प्रधानता रहती है जोकि इस गीत के माध्यम से प्रस्तुत हैः

दादी जी ऐसा वर ढूंढो नन्द लाला, पैन्ट कोट टाई वाला,
पंखा, रेडियो बिजली वाला, कमरे, कोठी, बैठकवाला।
विवाह के अवसर पर साली जीजा से हँसी ठिठोली करती रहती है और वधु की सहेलियां घेर बैठती है और साथ ही एक ओर से उभरता है इस प्रकार के गीतों का स्वरः
मैं तेरी साली तू मेरा जीज्या
जीज्जा ते साली सू बतलाइये, जीजा
जै तेरी साली घरां न पावे
आंगणियां में फिर जाइये, हो जीज्जा,
साली सू मिल जाइयो हो जीज्जा
सेर मिठाई एक रुपया
आले में धरजाइये हो जीज्जा।

हरियाणवी लोकगीतों की शृंगारिक भावनाएं अत्यंत मधुर और गम्भीर हैं। उनमें कलात्मक साहित्य की भांति उहात्मक पद्धति को नहीं अपनाया गया है। नायक–नायिका के सौन्दर्य का वर्णन करते समय भी कलात्मकता है। यहां साहित्य की शैली को न अपनाकर एक दूसरी ही पद्धति को अपनाया गया है।
हास्य सम्बंधी गीतों में तथा गालियों आदि में शृंगार रस का आस्वादन होता है। जीजा साली से सम्बन्धित एक गीत इस प्रकार हैः–

जीज्जा रे ओड़ी में आड़डी आउँगी
जै मेरे जीज्जा ने आतों सुण ल्यूं।
मोटर रे हवाई जहाज बण ज्याउंगी।
जै मेरे जीज्जा पै भीड़ पड़ेगी।
जीज्जा बजारा मैं बिक ज्याउंगी।
जीज्जा रे ओड़डी मैं आड़डी जाउंगी।

ऋतु सम्बन्धित गीतों में विशेषतः होली व सावन के गीतों में शृंगार रस प्रधान रूप से दृष्टिगोचर होता है। होली के प्रभाव से वातावरण ही रसमय हो जाता है। कही अश्लीलता की भी झलक पड़ती है और इसका सर्वव्यवपक प्रभाव होता है जैसे कि देवर–भाभी गीत से प्रतीत होता हैः

कांटटो लाग्यो रे देवरिया मो पै संग चलो ने जाय।
अपने महल की मैं अलबेली, जोबन खिल रेह फूल चमेली,
धूप लगे कुम्हलाय........................
कांटटो लाग्यो रे देवरिया मो पै संग चलो न जाय।
इसी प्रकार एक वधु अपनी सास से अपने देवर की शिकायत करती है जोकि इस गीत के माध्यम से प्रस्तुत हैः

समझा लो अपणो लाला री, मेरी घुस गयो आज अटरिया में,
मैं गोबर गेरण जांउ, मेरे संग चले है देवरिया।
मेरा गोबर को तो गोबर बखेरो, धर गयो दुबक कमरिया में,
समझा ले अपने लाला रही......................... ।
मैं फाग खेलन जाउं मेरे संग चले है देवरियां
मैं सगरी सरोबार कर दी मेरी लाग्यों दाग चुनरियां में,
समझा ले अपने लाला री,........................... ।[6]
किसी भी उत्सव के अवसर पर कोई महिला यह गीत गाती हैः
बैठी–बैठी बात मिलावा : लुगाई माहरै गीत न गावै,
ताती–ताती पूरी और गुलदाना
खाने न दौड़ी–दौड़ी आवै, लुगाई माहरै गीत न गावा।

मनोवैज्ञानिकता देखिए कि किस प्रकार उपर्युक्त पंक्तियों में औरतों को स्पष्ट बात कह दी है कि उन्हें हंसा दिया और काम में, अर्थात गाने में लगा दिया। अन्यथा किसी व्यक्ति को यह कह दिया जाए कि उसने यह काम नहीं किया तो वह रोष में आ जाएगा, लेकिन यह रागात्मक शैली के कथन से कोइ विषम भाव उत्पन्न नहीं होता, बल्कि यह गीत उन्हें खुशी–खुशी अपने कर्म के प्रति सचेत करता है। इससे पता चलता है कि लोकगीतों में कटु बात को भी कितनी सहजता से व्यक्त कर दिया जाता है। यह सहजता रागात्मक और आत्मीय संबंधों के कारण होती है।

इन गीतों में सांझी दुर्गा का प्रतीक मानी जाती है
मेरी सांझी के ओरे दोरे दो चोला की भुट्ठी
मैं तैने पूछूं सांझी कै तोले की गूठठी
किन्ने ए गड़ाई भड़ाई किन्ने मोल चुकाई
मेरे बाबल न गड़ाई भड़ाई बीरा मोल चुकाई
दीवा ले कै देखन लागी खाट तलै तै पाई
मरियों ए सुनार का लड़का तोला और गवाई।
यहां सुनार की प्रवृति पर व्यंग्य किया गया है।

गांवों में चाहे यह न पता हो कि किसकी बहू है, तब भी गली से निकलती नई–नवेली दुल्हन को देखने की लालसा वृद्धों और युवतियों में रहती है और वे अपने–अपने घरों से निकल कर उसका घूँघट उठाकर देखती हैं, बीच से ही कोई पूछ उठती हैः–

नाक सुआ सा
मुंह बटुआ सा
किसकी बहू आई

यह लोक जीवन में आत्मीयता और सौन्दर्य की परिभाषा है। बारातियों एवं समधी को विवाह के अवसर पर सीठने दिए जाते हैं और समधी उन्हें हंस कर स्वीकार करता हैः

हमनै बुलाए सुथरे–सुथरे, ये भूडे–भूडे आए री पसेरे।
हमनै बुलाए जुल्फां वाले, ये गंजे–गंजे आए री पसेरे।
हमनै बुलाए पढ़े–लिखे, ये सारे मूरख आए री पसेरे।
तू क्यू (समधी का नाम) दूबला
तेरी गोरी मोटी
आप खावै चक्क चूरमा
तन्नै जौ की रोटी।

लड़की के जन्म पर परिवार की ओर से कोई खुशी नहीं मनाई जाती, परन्तु लड़की अपने कार्यों, व्यवहार और प्यार से सबका मन जीत लेती है। तभी विवाह के अवसर पर उसके गीत इस प्रकार गाए जाते हैंः

लाडो हमारी है चांद तारा,
है चांद तारा वर मांगती है
वर ढूंढन उसके ताऊ जी निकले
चारों तरफ वर वो ढूंढ आए
बी.ए. पास के लड़के बहुत हैं
एम.ए. पास वर वो मांगती है।

उपर्युक्त गीत से पता चलता है कि आज से लगभग तीस साल पहले यहां शिक्षा का अभाव था और लड़कियां एम.ए. पास वर की इच्छा रखती थी।
(नारी) बहू लोकगीतों के माध्यम से अपनी अपेक्षाएं और आवश्यकताएं भली प्रकार प्रकट करती है। वह यह भी बता देना चाहती है कि यदि उसके साथ उचित, अच्छा व्यवहार न किया गया तो वह यह कार्य करने की शक्ति भी रखती हैः

कोठे उपर कोठरी, मैं वापै रेल चलाई दूंगी ।
जो मेरी सासड प्यार करे तो सबे तीरथ करवाय दूंगी।
जो मेरी सासुड लड़ो–भिड़े तो रोटि न तरसाय दूंगी।
जो मेरी ननदी प्यार करे तो अच्छौ घर ढूंढवाय दूंगी।
जो मेरा देवर प्यार करे तो बी.ए. पास करवाय दूंगी।
जो मेरा देवर चुगली करे तो मूंगफली बिकवाय दूंगी।

इस प्रकार वह किसी भी प्रकार का अत्याचार सहन करने को तैयार नहीं है। इसी प्रकार का भाव निम्न पंक्तियों में भी मिलता है।

ओ–ओ–ओ सरन दे नाई कि
जो मेरा सुसरा लड़े घुलेगा।
खेड़े में आग लगा दयूंगी।

विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में नारी अपनी शक्ति से सभी को परिचित करवा देना चाहती है। सामान्य जीवन में यह सब बातें नहीं कहती लेकिन गीतों के माध्यम से अपने दमित भावों को व्यक्त करती है।
बहू को रहना भी परिवार के साथ है, और अपनी बात कहनी भी है। वह हंसी–खुशी के मौके पर संगठित रूप से सब परिवार जनों को सचेत कर देती है, ताकि कोई कुछ कह न सके। एक साथ न जाने कितनी कुंठित नारियों की भावनाओं का निवारण गीतों के माध्यम से हो जाता है।
परिवार में अत्याचार और अन्याय के प्रति विरोध करने में जब नारी अपने पति को कमजोर पाती है तो वह अपनी संघर्ष शक्ति और जीवन के प्रति आस्था को व्यक्त करते हुए कहती हैः

आँगण बीच कूँआ राज्जा मैं डूब कै मरूंगी
तू मत डरियो राज्जा मैं तो औरां नैं डराउंगी
सुसरा लड़ैगा पाच्छा फेर कै लडूँगी
आज्या री सासड़ तेन्नै धान से छडूंगी।
तेरी घाणी सी भरूंगी तेरी घाणो सी भरूंगी
आँगण बीच ——————————
जेठ लड़ैगा तैं पाच्छा फेर लडूँगी
तेरी घाणी बीच...............
देवर लड़ैगा तै आग्गा घेर कै लडूंगी
आज्या री दुराणी तेरे धान से छडूंगी
तेरी धाणी सी भरूँगी तेरी घाणी सी भरूँगी
आँगण बीच ————————————
नणद लड़ैगी तै आग्गा घेर के लडूँगी
तेरी घाणी सी भरूंगी तेरी घाणी सी भरूँगी।

यदि घर वाले अत्याचार करेंगे तो मैं उन्हें स्वीकार नहीं करूंगी वह अपने पति को विश्वास में लेकर अपने परिवार वालों की मानसिकता को बदलना चाहती है। उसे पता है कि उसका पति उसके किसी भी विद्रोहात्मक कदम के लिए भयभीत है डरता है, लेकिन पहले वह अपने पति को पूर्ण विश्वास दिला देती है कि वह ऐसा कोई भी गलत कदम नहीं उठाएगी, जिसके कारण उसे पछताना पड़े। वह मरने को तैयार नहीं, लड़ने को तैयार है, यह है उसकी जीवन के प्रति आस्था।

भारतीय संस्कृति को पौराणिक प्रसंगों द्वारा उजागर किया गया है। परिवार के प्रति बहू की इस भावना को उद्घाटित किया गया है कि वह अपने हर हर्षोल्लास में उनके साथ किस प्रकार जुड़ी हुई है। एकांकी जीवन उसे प्रिय नहीं। वह अपनी खुशी को परिवार के सब लोगों में बांटना चाहती है उसका पूरा विश्वास है कि उसके परिवार के ये प्रियजन यदि पुत्र जन्म के अवसर पर यहां होते तो किस प्रकार उत्सव मनाया जाता। ऐसे समय में वह अपने माता–पिता, भाई–बहन को याद न कर सास–ससुर, ननद पंडित आदि को याद करती है:

सिया मन मैं रही घबराय
लवकुश बण मैं हुए।
आज इस बण मैं सासू जो होती
देती दिवले जलाय। लवकुश बण मैं हुए
आज इस बण मैं नणद जो होती
लेती सतीये धराय। लवकुश ––––
आज इस बण मैं पंडत जो होता
लेता हवन कराय।.... लवकुश बण मैं हुए।

माँ अपनी बेटी को पराये घर जाते हुए सीख देती है कि उसे किसी प्रकार मर्यादा में रहकर अपना परिवार चलाना होगा:

उँची हे दोघड़ नीचा–सा बारणां
मैं समझाउँ ए समझ म्हारी लाडडो
सोहरे के घर मैं जाणाँ ए होगा
जोहड़ भी बिराणा हे लाडडो कुँआ भी बिराणाँ
नीची–नीची नजर लुक–झुक लखाणां ए होगा
बड़ा ए कुणबा लाडडो बड़ा सै परिवार
भीतर बड़ कै नै लाडडो जीमणां ए होगा
सासू–सुसरे की तै टहल हे लाडडो बजाणां
पति अपणे का हुकम आठों पहर बजाणां।

विवाह के अवसर पर सामूहिक रूप से गाने पर सभी लड़कियों को उपुर्यक्त सीख अनजाने ही मिल जाती है। यदि किसी नवयौवना को सीख दी जाए तो शायद वह खीझ उठेगी, लेकिन लोकगीत इस युवा वर्ग की नब्ज को पहचान जीवन की कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति देता है। उसे मानसिक रूप से तैयार कर देता है, ताकि किसी प्रकार की विषमताएं, विकृतियां पैदा न हों और वह अपने आप को उस परिवार के साथ समायोजित कर सके।

माँ की सीख सुनकर बेटी भविष्य में आने वाली विषम परिस्थितियों की कल्पना करती है, तब उसकी विवाहित सखी, अपने जीवन के कटु अनुभवों के विषय में बताती है:

सासरे मैं जाणा होगा, काला साँप खिलाणा होगा
दूसरे के हाथ का दिया खाणा होगा, बैठी–बैठी रोउँ
इस जिन्दगी नै, हे मेरी बेब्बे! किस बिपदा मैं खाऊँ
जिसकी पाज्या लड़नी सासू, तलै टूक और ऊपर आँसू
तलै टूक और ऊपर आँसू मैं बैठी–बैठी रोऊँ
इस जिंदगी नै, हे मेरी बेब्बे! किस बिपदा में खोउँ।
आल्ला ईंधण गोस्सा हे बेब्बे।
नणद दिखावै ठोस्सा हे बेब्बे।
किस पै करूं भरोसा हे बेब्बे। मैं बैठी–बैठी रोउँ
इस जिंदगी नैं, हे मेरी बेब्बे। किस बिपदा में खोउँ।
रेडियो का गाणा हे बेब्बे। समझेगा कोए स्याणा हे बेब्बे
जिसका बालम याणाँ हे बेब्बे! जेठ करै धिगताणां हे बेब्बे
हाँ जेठ करै धिगताणां हे बेब्बे। मैं बैठी–बैठी रोउँ
इस जिंदगी नै, हे मेरी बेब्बे! किस बिपदा में खोउँ।

अपनी सखी से वह किस प्रकार अपने जीवन के कटु अनुभवों को बांटती है। यह केवल एक युवती के नहीं अपितु ग्रामवासिनी प्रत्येक नारी के आँसू है। आज की परिस्थितियां भिन्न है। लेकिन परिवेश के अनुकूल मनोभावों को प्रस्तुत किया गया है।

लड़की की व्यथा को मायके में केवल मां ही समझ सकती है। मां के बाद उसे किस प्रकार की मानसिक यातनाओं से गुजरना पड़ता है। इसका बड़ा सुन्दर चित्रण इस गीत में हुआ है:

हे मत मरियो किसै की माय
मायड़ी बिना ए बेट्ठी बहोत दु:खी।
हे भावज नैं बोल दिए बोल
ओवरे मैं सुबकूँ मैं खडी–खडी
हे बारणे तें आग्या, मेरा बीर
बेब्बे हे क्यूँ सुबकै, तूँ खड़ी–खडी
हे मत मरियो किसै की माय....
हे मत रोवै छोट्टी बाहण
साँझ तक कर दयूँ खाट खड़ी।
रे मत लाइए भावज कै हाथ
भावज बिन्न सून्नी साल पडी।
हे मत मरियो किसै की माय
मायड़ बिना एक बेट्टी बहोत दुखी।

इन गीतों में आधुनिक प्रभाव भी देखने को मिलता है। इस प्रभाव के कारण ग्रामीण नारी शहरों की और आकर्षित होती है और बड़े–बड़े शहरों में जाना चाहती है। इस भाव का चित्रण निम्न गीत में मिलता है:

चल बन्नै बम्बई की सड़क पै मोटर कार चलाएँगे
एक साहब दो मेम बिठा कर रपैया टिकट लगाएँगे
जै बन्नै हमें घाटा पड़ैगा तेरी दादी को बेच लगाएँगे
चल बनैं दिल्ली की सड़क पै मोटर कार चलाएंगे।
एक साहब––––––––––––––––––––––––।

शहरी प्रभाव के कारण कृषि को छोड़ नौकरी करने की लालसा व्यक्त करती नारी जो बम्बई, दिल्ली, कलकता, आगरा और लाहौर जाना चाहती है। इससे पता चलता है कि यह गीत भारत–पाक विभाजन से पहले का है।

इस पनघट गीत में नवयौवना बहू की रसिकता का अद्भूत चित्रण किया गया है:

सासड़ पनियाँ कैसे जाऊँ, रसीले दोए नैना
सासड़––––––––––––––––––––––––––––
बहु ओढो चटक चुनरिया और सिर पै धरो गगरिया
छोटी नणदी ले ल्यो साथ रसीले दोए नैना। सासड़....
मनैं ओढ़ी चटक चुनरिया और सिर पर धरी गगरिया
छोटी नणदी ले लियो साथ रसीले दोए नैना। सासड़
तुम बैठो कदम्ब की छडयाँ मैं भर ल्याउँ जल गगरिया
नणदी मत कहियों घर जाय रसीले दोए नैना। सासड़
तेरा जेठ में एक ब्याह करूँगी सामण मैं करूँ मुकलावा

मुड़कै न लेउँ तेरा नाम रसीले दोए नैना।
सासड़ पनियाँ कैसे जाउँ रसीले दोउ नैना।

उपर्युक्त गीत में सास उन रसिक मनोभावों को नियन्त्रित करने की बात कहती है, जैसे चुनरी ओढ़ लो, ननद को साथ ले लो आदि, लेकिन रसि भावनाएं उसका पीछा नहीं छोड़ती। इसलिए वह अपनी भावनाओं के अनुकूल आचरण करती है। इससे पता चलता है कि पति–पत्नी को भी आपस में मिलने नहीं दिया जाता था, परिवार का निरन्तर उन पर पहरा रहता था। पनघट के समय ही वे मिलने का/देखने का प्रयास करते थे लेकिन ननद ऐसा नहीं करने देती थी। जिसके कारण बहू उसका विवाह अतिशीघ्र करवाने की बात करती थी। जिसके कारण ननद–भाभी के रिश्तों में कड़वाहट पैदा होती थी। एक गीत में वह कहती हैः 'सास–ननद मेरी जनम की बैरन'। यह बात इसी भाव को अभिव्यक्त करती है।
सास और ननद के अच्छे संबंधों की अभिव्यक्ति भी इन लोकगीतों में मिलती है। जिसमें सास को कौशल्या कहा गया। ननद भी भाभी की हर सम्भव सहायता करती है। जब भाई भाभी में झगड़ा हो जाता है तो वह उसे दूर करवाती है, तब भाभी प्रसन्न होकर उसे कहती हैः

दयूँगी री नणदल
बुगले की तील
छटे है महीने
सीदधा कोथली जी महाराज।

इस प्रकार उन संबंधों की मिठास इन गीतों में अभिव्यक्त हुई है। जहाँ ननद, भाभी खुशी–खुशी एक दूसरे के सुख–दुख को बांटती है। मां अपने बेटे को निवृति मार्ग पर चलने से रोक कर प्रवृति मार्ग पर चलने का संदेश देती है। वह अपने व्यावहारिक ज्ञान और वेदों की दुहाई देकर कहती हैः

बेटा, माता बरजै रै पूत की
बेटा, मत नां हुइये रे फकीर
तेरी याणी रे उमर, बाणी बेद की।
बेटा कौण तनै देगा रे खाण नै
और किसनै कहैगा मुख माय....... तेरी याणी रे .....।
बेटा, धूप पड़ै रे धरती तपै,
तेरी कँवल–सूरत कुम्हलाय....... तेरी याणी रे ....।
जब आवै रे सामण भादुआ,
और मेघा बरसेंगे मूसलधार........ तेरी याणी रे.....।
तेरे बह ज्यांगे धूणी रे साथरा,
और कुछ नां पर बसाय...... तेरी याणी रे.......।

प्रत्येक युग की मां को अपने बेटे की चिन्ता रहती है कि वह किस प्रकार विषम परिस्थितियों का सामना करेगा। वह उसे संसार से पलायन करने का नहीं अपितु संसार में रहकर उससे जूझने की प्रेरणा देती है।
निम्न गीत में गांधी जी से प्रभावित जनमानस किस प्रकार गा उठा हैः–

तेरे घर में घुस गए चोर
गाँधी दीवा दिखाइए रे।
तेरे तो भाई गाँधी टोपी आले
ये टोप आले सै कौण।
गांधी दीवा दिखाइए रे।
तेरे तो भाई गाँधी ये धोती आले
ये पतलून आले सै कौणं। गांधी दीवा
तेरे तो भाई गांधी ये लाठी आले
ये बंदूक आल सै कोण।
गांधी दीवा दिखाइए रै।

चीन से हुई लड़ाई का प्रभाव भी इन गीतों में मिलता है। जिसमें एक युवती देश–भक्ति की भावना को अभिव्यक्त करते हुए कहती है

मैं चीन से लडने जाउँगी, मानू ना मेरी मां
ये सारा जेवर बेचूंगी, कुछै रक्षा कोष मैं दयूंगी
कुछ के हथियार मंगाउंगी, मानूं ना मेरी मां।

समाज सुधार देशभक्ति, सांस्कृतिक, नव जागरण, धार्मिक जागृति तथा राजनैतिक चेतना के गीतों के अतिरिक्त ग्रामोत्थान के गीत भी उपलब्ध है। इन गीतों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पुनर्जागरण के साथ–साथ आधुनिक जीवन की प्रगति एवं विषम जटिलताओं का आकलन भी दर्शनीय है।
लोकगीत जंगलों से, पहाड़ों से बहते झरने हैं, ये वे औषधीय वृक्ष हैं, जो लहलहाते हुए सदैव आक्सीजन प्रवाहित करते हैं और मानव जीवन में आस्था, आशा और सौन्दर्य का संचार करते है।
इस प्रकार उपुर्यक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि हरियाणा के लोक गीतों में मानव मनोविज्ञान तथा रस की अनन्त धारा वेग से प्रवाहित हुई है। लोकगीतों का प्रत्येक शब्द रस की प्रबल लहर बनकर सहृदय जनों को आनन्दमग्न कर देता है। इन गीतों में जीवन का आनन्द उल्लास, स्पष्टता और सच्चाई का चित्रण बखूबी किया गया है।

संदर्भ

1. यादव शंकरलाल, हरियाणा प्रदेश का लोकसाहित्य, पृ. 1
2. वर्मा धीरेन्द्र (सं.) हिन्दी साहित्यिक कोष, पृ. 747
3. शर्मा राजनाथ, साहित्यिक निबंध, पृ. 135
4. भारद्वाज ओमप्रकाश, हरियाणवी लोककाव्य में सौन्दर्य चेतना, पृ. 1
5. वही, पृ. 93–94
6. हरियाणवी संवाद पत्रिका